Vol 5 Issue 11 May 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | May - 2016

GRT Golden Research Thoughts

अहमदबख्श थानेसरी रामायण : धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक एकता का महाकाव्य

कृष्ण चन्द रल्हाण
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी , डी.ए.वी. कॉलेज, पूण्डरी (कैथल)
पूर्व कुलसचिव, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

प्रस्तावना :–

किसी भी व्यक्ति को ज्ञात नहीं है कि उसका जन्म कब, कहां और किस मां के गर्भ से होगा, लेकिन जब उसका जन्म हो जाता है तो उसको धर्म, जाति, समुदाय, वर्ग, क्षेत्र आदि में बांट दिया जाता है। जब धीरे-धीरे वह बड़ा होता है तो उसको धर्म के आधार पर, सम्प्रदाय के आधार पर, जाति के आधार पर अनेक प्रकार की अवधारणाओं से सामना करना पड़ता है। कहने का अर्थ है कि मनुष्य को धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिकता जैसे शब्दों को न केवल सुनना पड़ता है बल्कि अपने देश में उनकी क्या अवधारणा है? क्या स्वरूप है? इससे भी साक्षात्कार करना पड़ता है। अपना देश भारत विभिन्न धर्मों, विभिन्न सम्प्रदायों, विभिन्न संस्कृतियों, विभिन्न भाषाओं, विभिन्न वेशभूषाओं का देश है। यहां पर विविधताओं में एकता है। भारत में धर्मनिरपेक्षता का विचार प्राचीन समय से ही सदैव चर्चा में रहा है। प्रायः प्रत्येक राजनैतिक दल धर्मनिरपेक्ष होने की घोषणा करता है और प्रत्येक राजनेता धर्मनिरपेक्ष होने की शपथ लेता है। अपने देश के संविधान में प्रत्येक भारतीय नागरिक को किसी भी धर्म को अपनाने की स्वतन्त्रता है, साथ में उसमें यह भी कहा गया है कि वह दूसरे के धर्म को आदर भाव से देखेगा यानि किसी भी व्यक्ति को दूसरे के धर्म के बारे में अपशब्द बोलना या धार्मिक भावनाओं को भड़काने का अधिकार नहीं है। धर्म निरपेक्षता 'सर्वधर्म समभाव' के सिद्धान्त पर आधारित है। यानि सभी धर्मों का समान आदर करना। असल में धर्म निरपेक्षता के दो पहलू हैं – एक में वह अलग-अलग धर्म के वर्चस्व का विरोध करता है और दूसरे में एक ही धर्म में छिपे हुए वर्चस्व का विरोध करता है।१ धर्मनिरपेक्षता का सामान्य अर्थ है – धर्मनिरपेक्ष समाज अर्थात् अलग-अलग धर्मों के वर्चस्व और उसी धर्म में छिपे हुए वर्चस्वों से रहित समाज का निर्माण करना। यानि धर्मों के अन्दर स्वतन्त्रतता और विभिन्न धर्मों के मध्य और उनके अन्दर समानता का भाव ही धर्मनिरपेक्षता है। धर्मनिरपेक्षता पर पण्डित नेहरु ने कहा था – 'सभी धर्मों को राज्य द्वारा समान संरक्षण।'२ वह ऐसा धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाना चाहते थे जिसमें सभी धर्मों की रक्षा हो, किसी दूसरे धर्म की कीमत पर अपने धर्म की प्रशंसा न करे और स्वयं किसी धर्म को राज्यधर्म के रूप में स्वीकार न करे। उनके लिए धर्मनिरपेक्षता का अर्थ था – समस्त किस्म की साम्प्रदायिकता का विरोध। उनके लिए धर्मनिरपेक्षता का सिद्धान्त भारत की एकता और अखण्डता की गारण्टी था। अपने देश में बहुत पहले से ही अन्तर-धार्मिक संस्कृति विद्यमान है। भारतीय धर्मनिरपेक्षता का सम्बन्ध व्यक्तियों की धार्मिक स्वतन्त्रता से ही नहीं बल्कि अल्पसंख्यक समुदायों की धार्मिक स्वतन्त्रता से भी है। अपने देश में जब-जब भी आवश्यकता पड़ी मुसलमान कवियों ने हिन्दू देवी-देवताओं में गहरी आस्था दिखाते हुए रामायण जैसे महाकाव्य लिखे। अहमदबख्श थानेसरी की 'रामायण' इसी धर्मनिरपेक्षता का उदाहरण है।

धर्मनिरपेक्षता से जुड़ी हुई है साम्प्रदायिक एकता। अर्थात् धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक एकता का कुछ कदमों तक

उसका अर्थ एक ही होता है लेकिन धीरे-धीरे दोनों की अवधारणा अपना विस्तृत रूप ले लेती हैं। साम्प्रदायिक विचारधारा भी धर्म से जुड़ी हुई है। प्रो° बिपन चन्द्र ने लिखा है - ''एक ही धर्म को मानने वाले लोगों के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हित एक जैसे होते हैं। इसी से धर्म पर आधारित राजनैतिक और सामाजिक समुदायों का जन्म होता है।''[३] भारत में लोग विभिन्न वर्गों, विभिन्न समुदायों, विभिन्न जातियों में विभाजित होकर राजनैतिक और सामाजिक जीवन व्यतीत करते हैं। यहीं से साम्प्रदायिकता आरम्भ होती है। भारत जैसे विभिन्न धर्मों में बंटे हुए समाज में यह मान लिया जाता है कि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों या समुदायों के हित एक-दूसरे के विरोधी हैं। भारत में समय-समय पर साम्प्रदायिक हिंसा होती रही हैं। प्रो° बिपन चन्द्र ने कहा है कि - ''हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई साम्प्रदायिकताएं एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। वह ऊपर से भले ही एक ही दिखाई देती हों लेकिन उनके अन्दर एक ही प्रकार की साम्प्रदायिक विचारधारा काम कर रही होती है।''[४] किसी भी धर्म को मानने वाले व्यक्तियों में जब कट्टरपन आ जाता है तो साम्प्रदायिकता पनपती है और आपस में धर्म के आधार पर हिंसा होती है। समय-समय पर भारत में विशेषकर हिन्दू धर्म और मुस्लिम धर्म में कई ऐसे संगठन खड़े होते रहे हैं जो अत्यन्त कट्टरवादी रहे हैं। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् साम्प्रदायिकता आधुनिक राजनीति से जुड़ गई। देश के राजनेता, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा के आधार पर वोट की राजनीति करने लगे। इस वोट की राजनीति में धर्म पर आधारित साम्प्रदायिक दंगों के साथ-साथ जातीय हिंसा भी होने लगी। इसका ताजा उदाहरण हरियाणा है जहां पर फरवरी मास में आरक्षण के नाम पर आन्दोलन हुआ जिसने जातीय हिंसा का रूप धारण कर लिया।

यहां पर कितना गजब का संयोग है कि मैं जिस कवि के महाकाव्य 'रामायण' का धर्मनिरपेक्षता और सामप्रदायिक एकता के रूप में विश्लेषण करने जा रहा हूं वह हरियाणा का है और धर्म से मुसलमान है, जिसका नाम है अहमदबख्श थानेसरी। अहमदबख्श थानेसरी का जन्म काल अज्ञात है फिर भी अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका जन्म १६वीं शताब्दी के मध्य हुआ होगा क्योंकि उनकी 'रामायण' की रचना लगभग १६वीं शताब्दी के अन्त में हुई है। हरियाणा प्रदेश के थानेसर नगर वर्तमान कुरुक्षेत्र में उनका जन्म हुआ और बचपन बीता। इसी पावन धरती पर ही उनके मन में कलाकारी के अंकुर प्रस्फुटित हुए। उनका जन्म गाने-बजाने वाली कंचन नामक जाति में हुआ था जो मुसलमानों की जाति थी। उनके परिवार के बारे में केवल मात्र इतना ज्ञात है कि उनकी ईदन नाम की एकमात्र संतान थी। वैसे तो उनकी 'रामायण' का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि अहमदबख्श समूचे समाज को अपना परिवार मानते थे। विवेच्य 'रामायण' के सम्पादक श्री बालकृष्ण मुज़्तर के पिता पं. राजाराम भारद्वाज उनको व्यक्तिगत रूप से जानते थे, किन्तु उनके व्यक्तित्व के सिवाए वह भी नहीं जानते थे। अहमदबख्श की इहलोक जीवन-लीला कब समाप्त हुई इस बारे में भी अनुमान ही लगाया जा सकता है। उन्होंने रावण की मृत्यु के पश्चात् दो चम्बोले लिखकर और यह कहकर कि 'अब कहां तलक कथना करूं में मूर्ख नादान'[५], 'रामायण' समाप्त कर दी। कवि द्वारा सहसा एक बारगी 'रामायण' समाप्त कर देने से यह आभास होता है कि उनका स्वास्थ्य उस समय ठीक नहीं था और शायद वह समय आ गया था जिसकी कामना उन्होंने 'रामायण' के आरम्भ में की थी कि मोक्ष अहमद' प्रभु चाहता।[६] अहमदबख्श थानेसरी सहज स्वभाव, उदार हृदय एवं परोपकारी व्यक्ति थे। पं. राजाराम भारद्वाज, जिनका निधन ६५ वर्ष की आयु में सन् १६७० ई. में हुआ था, के अनुसार अहमदबख्श गौरवपूर्ण मझोले कद का हंसमुख व्यक्ति था। सफेद धोती-कुर्ता, काला जूता और सिर पर जरी की टोपी पहनता था। कवि के लिबास से ही यह बात और भी पुष्ट हो जाती है कि वह सादा जीवन व्यतीत करते थे। अहमदबख्श साधन सम्पन्न एवं खाते-पीते घर से सम्बन्ध रखते थे। वह परोपकारी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और जीवन में किसी भी प्रकार की अश्लीलता एवं बुराई उन्हें स्वीकार नहीं थी।

अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' हरियाणवी में प्रकाशित प्रथम रामकाव्य है। इससे पूर्व हरियाणवी लोकसाहित्य में रामकथा के पात्रों का यथा सम्भव नाम तो आया है, किन्तु समूची कथा को काव्य रूप प्रदान करने का श्रेय सर्वप्रथम अहमदबख्श को ही जाता है। हालांकि यह रामायण देवनागरी लिपि में रचित है, किन्तु हरियाणवी बोली पर आधारित है। प्रस्तुत रचना कुरुक्षेत्र निवासी उर्दू और हिन्दी के विद्वान श्री बालकृष्ण मुज़्तर के सम्पादन में हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ द्वारा सन् १६८३ ई. में प्रकाशित की गई है। इसका रचनाकाल प्रकाशन के लगभग एक सौ वर्ष पूर्व था यानि इसे हम भारतेन्दु युग की रचना कह सकते हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह रचना सांग-शैली के अंतर्गत आती है। अहमदबख्श थानेसरी कम पढ़े-लिखे होने के कारण भी एक उच्च कोटि के विद्वान एवं बहुमुखी सम्पन्न व्यक्ति थे। उनहोंने विभिन्न विद्वानों द्वारा रचित रामकथा का भली-भांति अध्ययन किया हुआ था। रामकथा के आदिकाव्य 'वाल्मीकि रामायण' का उन्होंने अध्ययन किया हुआ था, जिससे उन्होंने प्रेरणा ग्रहण की थी। उनकी 'रामायण' के अनेक प्रसंगों एवं घटनाओं से यह बात स्पष्ट झलकती है। बालकृष्ण मुज़्तर ने भी इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है - ''कवि अहमदबख्श की प्रस्तुत पुस्तक 'रामायण' की धरातल संत तुलसीदास का 'रामचरितमानस' न होकर महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण' है।''[७] कुछ स्थलों पर अहमदबख्श 'वाल्मीकि रामायण' के अतिरिक्त 'आनन्द रामायण' से भी प्रभावित जान पड़ते हैं। अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' के प्रेरणा-स्त्रोतों में तुलसीदास-कृत 'रामचरितमानस' भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' के अध्ययन से भी प्रतीत होता है कि कवि ने 'रामचरितमानस' से प्रेरणा ली थी। बालकृष्ण मुज़्तर ने लिखा है - 'कवि अहमदबख्श थानेसरी की रामायण में कई प्रसंग ऐसे हैं, जिससे वह निशानदेही मिलती है कि उसने संत तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' से भी लाभ उठाया है।[८] अहमदबख्श थानेसरी ने 'वाल्मीकि रामायण', 'रामचरितमानस', 'आनन्द रामायण', 'अध्यात्म रामायण' के अलावा 'बगंला रामायण', 'ओड़िया रामायण', 'पंजाबी रामायण' आदि भारतीय भाषाओं में रचित रामकथा के प्रसंगों को भी ग्रहण किया है। अहमदबख्श थानेसरी ने नई उद्भावनाएं भी की हैं तथा कहीं-कहीं पर अन्य भारतीय भाषाओं के कथा-प्रसंगों का उनकी 'रामायण' के कथा प्रसंगों से अद्भुत साम्य है। अन्ततः यह कहना गलत न होगा कि अहमदबख्श को हिन्दी रामकाव्य परम्परा एवं अन्य भारतीय भाषाओं की रामकाव्य परमपरा का ज्ञान प्राप्त था, तभी उनमें से कई ग्रंथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में उनकी 'रामायण' के प्रेरणा स्त्रोत बनें। अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण',

'वाल्मीकि रामायण' एवं 'रामचरितमानस' के समान काण्डों में विभाजित हैं। यह रामयाण आदिकाण्ड, अयोध्या काण्ड, अरण्य काण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड और लंका काण्ड इन छः काण्डों में विभक्त है और १६७३ चम्बोलों में अनुबन्धित है। प्रायः एक चम्बोले में आठ पंक्तियां होती हैं। प्रथम दो पंक्तियां दोहे की, फिर चार पंक्तियां चलत की और अन्तिम दो पंक्तियां मुकताल की हैं।

अहमदबख्श थानेसरी 'रामायण' में धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक एकता के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं। धर्मनिरपेक्षता का सर्वोत्तम उदाहरण तो यही है कि एक मुसलमान कवि ने हिन्दुओं के आदर्श भगवान् राम पर महाकाव्य लिखा और वह भी हरियाणवी लोक शैली में। उन्होंने अपनी 'रामायण' में हिन्दू देवी-देवताओं का बखूबी वर्णन ही नहीं किया है बल्कि उनके प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव भी दिखाया है। उन्होंने अपनी 'रामायण' में हरियाणा की सभ्यता और संस्कृति पर आधारित साम्प्रदायिक एकता के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। यहां पर दोनों दृष्टियों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

अहमदबख्श थानेसरी ने रामकथा के नायक श्री राम के स्वरूप को लेकर समूची कथा को भव्यभवन के समान निर्मित किया है। सारी कथाएं प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से उन्हीं से सम्बन्धित हैं। अहमदबख्श थानेसरी ने राम को पारब्रह्म का स्वरूप प्रदान करते हुए कहीं पर भी चूक नहीं की है। हालांकि कवि ने अनेक स्थानों पर समाज की रूचि एवं रामायण को लोकरंजक बनाने हेतु कुछ मोड़ दिए हैं, किन्तु ये सभी राम के स्वरूप को विकृत नहीं करते। अहमदबख्श थानेसरी के राम हमारे समक्ष जहां एक ओर दशरथ के पुत्र लौकिक राजकुमार हैं तो वहीं दूसरी ओर अनूप, सगुन, निर्गुण अलौकिक ब्रह्म है। राम का अनूप, सगुण एवं निर्गुण रूप प्रस्तुत है –

''गीध चला बैकुण्ठ को कर दर्शन भगवान्
गुणनवाद उच्चारता रिपू सूदन भान
राम तुम रूप अनूप सगुण निर्गुण
दस शीश बीस भुज का प्रचंड भव भय मोचन प्रभुनिसआसन
अनाध अगाध मर्याद काज गए प्रगट आप ब्रह्म पूर्ण धन
तुम्हे संत जी जपत अनन्त जान गुण जान पछान ऋषि सुमरन
मुकताल
सब जगत तुम्हारा नहीं तुम बिन निस्तारा
कर इतनी अस्तुति गीध बैकुण्ठ सधारा''[६]

उपरोक्त चम्बोले में राम को अनूप, निर्गुण, सगुण, अनाद, अगाध, अनन्त, मर्यादित आदि रूप में प्रस्तुत कर कवि ने समूची भक्ति को समेट दिया है। यहां पर राम दार्शनिकों के राम होते हुए भी संतों एवं भक्तों के भी भगवान हैं। इसके अतिरिक्त राम कुशल, प्रशासक, आदर्श मित्र, आदर्श शिष्य, आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पति भी हैं और सबसे अहम् बात यह है कि अहमदबख्श के राम हरियाणवी राम हैं। वह हरियाणवी रीति-रिवाजों के अनुकूल विवाह करते हैं और जीवन व्यतीत करते हैं। श्रीराम की आदर्श पत्नी सीता को कवि ने आदर्श पत्नी के अतिरिक्त धर्म की शक्ति रूप में अवतारी, समस्त ब्रह्माण्ड को रचने वाली एवं समस्त प्रजा की पालनहारी शक्ति के रूप में भी स्वीकार किया है –

''अरी माता तू पाप को जिन पाला बत्तीस धार
सीता माता धर्म की शक्ति रूप अवतार
सर्व ब्रह्माण्ड के रचने हारी है
ऐसे मम भ्रात पिता सबके कुल खलक जगत बिस्तारी हैं
देवताओं के देव महादेव आप प्रलयकाल करन अधिकारी हैं
यह ब्रह्म रूप सृष्टि रचिता विष्णु प्रजा पालन हारी हैं
मुकताल
इनसे अधिकाई जगत में किसने पाई
जाऊं बन प्रभु संग मुझे आज्ञा दे माई।[७०]

अपनी 'रामायण' के आरम्भ में अहमदबख्श थानेसरी ने प्रत्येक काण्ड के आरम्भ में भेंट प्रस्तुत की है। साथ ही उन्होंने कबीर की भांति गुरुभक्ति का भी परिचय दिया है, यथा-

''नमो गणेश नमो शारदा नमो हंस वाहिनी देव
नमो रामचन्द्र जी नमो सिया नमो शक्ति नमो शैव
नमो लक्ष्मण जी हनुमत के जत को
नमो भरत नमो शत्रुध्न जी नमो माई कैशल्य पत को
नमो शेष भुजंग नमो पुरजन नमो महश्विर नमो सूर्यरथ को
मुकताल

मेरी ढको नादानी नमो भादर गुरुज्ञानी
नमन सभन को करत रामलीला मनठानी''[११]

अहमदबख्श थानेसरी की हिन्दू देवी-देवताओं के प्रति आस्था के अतिरिक्त उनका भक्त रूप, दार्शनिकता, ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान, ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति और उनका फलादेश का ज्ञान और वेदान्त-ज्ञान 'रामायण' में कई स्थानों पर देखा जा सकता है। भगवान् राम के जन्म के सुअवसर पर जन्म कुण्डली का बखान करते हुए वशिष्ठ राजा दशरथ को कहते हैं -

''राजन् श्री रामचन्द्र के जन्म का हमसे सुनो बखान
चन्द्र बृहस्पति कर्क के पड़े लग्न अस्थान
तृतीय घर राहू कन्या का आया
फिर चौथे शनि तुला का है सब सुखदायक कारज छाया
फिर पंचम मंगल मकर का है घर सप्तम में फेरा पाया
है शुक्र मीन के सहित केतू सूर्य मेष का बतलाया
मुकताल
वृष का बुध प्यारे-ग्रह उच्च के कहे सारे
रामचन्द्र से लाल-सुफल है जन्म तुम्हारे''[१२]

अहमदबख्श थानेसरी ने इन ग्रहों का फलादेश बताते हुए लिखा है -

''राजन् सुन चन्द्र बृहस्पति कर्क का होता सुन्दर शरीर
नाना प्रकार प्रकाश हो सब गुणवान गम्भीर
शस्त्र और अलंकार धारि होगा
वह काम क्रोध मद लोभ नहीं इनका अधिकारि होगा
फिर कर्क चन्द्रभाल लग्न पड़ा वह धैर्यवान भारी होगा
कुबेर धनादक्ष से ज्यादा वह धन वाला भारी होगा।

मुकताल में भी भगवान राम की राशि का चित्रण इन पक्तियों में किया गया है -

पूर्ण रघुराई - रूप राशी रवि की न्याई
क्रोधहीन सुत गुणी जाया कौशल्या माई''[१३]

राम का वनवास जन्म-कुण्डली में से ग्रहों को देखकर बताते हैं -

''कन्या का राहू पड़ा इसे तीजे अस्थान
हो ऐसा बल तेरे पुत्र मा सिंह हस्ती भयवान
प्रतापी यश जग को दिखलावेगा
चौथे फिर शनी तुला का है तज मुलक पिता का जावेगा
माँ बाप भ्रात को दुःख होगा अपने सिर कष्ट उठावेगा
कई वर्ष भुगत इस बिपता को हट मुलक पिता के आवेगा''[१४]

अहमदबख्श राम-बनवास, सीता-हरण एवं युद्ध जैसी भयानक कठिनाइयों की भविष्यवाणी करते हैं और अपने ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान का परिचय देते हैं। सीता-हरण को युद्ध की भविष्यवाणी का उदाहरण प्रस्तुत है -

''सुन फल मंगल मकर का हो दुर्जन से जंग
उनका विघन विनाश हो जै होगी प्रभु संग
एक फिर परम कष्ट हो नारी का
नरी के ढूंडन के कारण होगा सिर कामलाचारी का
फलादेश और सुन ऐ राजन् घर नवें शुक्र बलकारी का
तेरा रामचन्द्र हो ब्रह्मज्ञानी धारेगा वेष ब्रह्मचारी का
मुकताल
क्या हुई ऋषि बरणी सिरफ केतु की करणी

रामचन्द्र ने तेरे कठिन बिपाता सिर धरनी''[९५]

कवि ने भक्त रूप, दार्शनिक रूप, ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति और उनके फलादेश एवं ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान के पश्चात् अन्त में उनके वेदान्त-ज्ञान का उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है। कवि का वेदान्त ज्ञान उस समय स्पष्ट होता है जब पंचवटी में साधु भेष धारण किए हुए रावण द्वारा भिक्षा मांगने पर सीता द्वारा उनका परिचय पूछने पर रावण उत्तर देता है -

''सुन्दरी हम वासी उस देश के जहां पारब्रह्म का खेल
दीवा बलता अगम का बिन बाती बिन तेल
बसते हैं परम जोत उजयाले मां
चित चेतन जीव मुंडा बैठा तथा अगम निगम के ताले माँ,
न तात मात न सुत दारा फिरें निराले माँ
तत अक्षर ओम हम सोहम मन्त्र जप सोते नींद खुलते माँ
मुकताल
धुन माँ धुन लाई नेत्र कुटी बनाई
तृष्णा की वसीभूत आनकर अलख जगाई''[९६]

अहमदबख्श थानेसरी 'रामायण' के उपर्युक्त उद्धरणों से कवि का दार्शनिक रूप, भक्त रूप, ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति का ज्ञान, उनका फलादेश, ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञान, वेदान्त ज्ञान, हिन्दू देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा और समर्पण के भाव से यह स्पष्ट है कि अहमदबख्श थानेसरी की हिन्दू धर्म में कितनी आस्था थी। उनकी 'रामायण' में वर्णित यह आस्था निःसन्देह धर्मनिरपेक्षता की पराकाष्ठा है और अहमदबख्श थानेसरी इसके राष्ट्रीय उदाहरण हैं। यहां पर मैं यह बात उद्धृत करना चाहूंगा कि विश्व में बहुत से मुसलमानों ने रामायण लिखी होगी लेकिन अहमदबख्श थानेसरी 'रामायण' में जो राम की जन्मकुण्डली बनाई गई है, वह विश्व में एकमात्र उदाहरण देखने को मिलता है।

अहमदबख्श थानेसरी 'रामायण' हरियाणवी लोकनाट्य शैली में लिखी गई है। हरियाणा की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर यह 'रामायण' हरियाणावासियों की जिन्दगी, रीति-रिवाज, खान-पान, पर्व-त्यौहार, ब्याह-शादी के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। स्वतन्त्रतता आन्दोलन के समय और हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनुसार भारतेन्दु के समय में लिखी गई यह 'रामायण' हरियाणा में साम्प्रदायिक एकता, आपसी भाईचारा, आपसी सद्भावना और जातीय सौहार्द के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करती है। श्रीराम के विवाह की नाई द्वारा चिट्ठी लाने से लेकर सीता की डोली ले जाने तक के समूचे प्रसंग को 'रामायण' में यथावत हरियाणा के किसी छोकरे एवं छोकरी के विवाह के समान चित्रित किया गया है। हरियाणा में सदैव 'पंचों' का सम्मान रहा है, उनको पंच परमेश्वर कहा जाता है। वह 'पंच' आपसी भाई चारे और प्रेम के लिए कार्य करते हैं। गांव में जब भी आपस में किसी का झगड़ा होता है तो यही 'पंच' उसको निपटाते हैं। राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह में जो मंडा चढ़ाया है उसमें 'पंचों' को सम्मिलित किया गया है-

''मंडा चढ़या जनक ने बुला बिठाए पंच
सीता का कंगणा बंधा खिल गया रूप अटंच
जानों साक्षात लक्ष्मी बिराज रही
सब देवांगना महलों में धर रूप स्त्रियां आज रही
चल ले बारात नृप सबके साथ जहां दशरथ महाफिल साज रही
एक सहस्त्र अशरफी अश्व बहुत दस गज रथ बेअन्दाज रही
मुकताल
हुई सिमधी से मिलाई जनक शाबाशी पाई
चलो जल्द ढुकाओं राव क्यों देर लगाई।''[९७]

अहमदबख्श थानेसरी 'रामायण' में राम के विवाह के समय उनकी बारात में विभिन्न जातियों को सम्मिलित कर साम्प्रदायिक एकता और आपसी सद्भावना का परिचय दिया है-

''कुल राय भाट नगरी के जाट अपसरा साठ गन्धर्व
आठ नक्काल तो एक हजार हुए।''[९८]

इसके अतिरिक्त राम की बारात में छत्तीस जातियों के लोगों को सम्मिलित करना, उन लोगों को जातीय सद्भावना और आपसी प्रेम-प्यार का सन्देश दिया है जो समाज को पैंतीस बिरादरी या छत्तीसवी बिरादरी का अलग-अलग नारा देते हैं। यह उन लोगों को भी एक करारा सन्देश है जिन्होंने पिछले दिनों हरियाणा में आगजनी, लूटपाट और जातीय हिंसा की है। अहमदबख्श

थानेसरी 'रामायण' ने तो स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय में ही इस एकता का सन्देश दे दिया था। कम से कम यह उपद्रवी लोग इस 'रामायण' का अध्ययन कर लें और विशेषकर इस चम्बोलो को पढ़ लें –

''खचरें लादी द्रव्य की ले वाशिष्ठ गुरु को साथ
चढ़ रथ धोंस बजा दई सारी चली बारात
लगी नहीं सात चढ़े सुख साथ
है छत्तीस जात भूप मुस्कात चले हुए जाते हैं।''[१६]

अहमदबख्श थानेसरी द्वारा राम की बारात में विभिन्न जातियों के लोगों को सम्मिलित करना हरियाणा की उस सामाजिक सौहार्दता का सूचक है, जहां समाज की विभिन्न जातियां किसी के भी सुख और दुख में एक साथ एकत्रित हुआ करती थी। हरियाणा इस बात का साक्षी है कि यहां के मेहनतकश लोग छल-प्रपंच और प्रतिद्वन्द्विता से कोसों दूर थे। ये लोग आपस में प्रेम, विश्वास और भाईचारे से जुड़े हुए थे। ये लोग दूसरे का दुख देख नहीं सकते थे। यही कारण है कि राम के वनवास पर उनको यह खबर बिच्छू के काटने के समान कष्टदायक लगी, यथा –

''हुई खबर राम वनवास की हुए नगर नर तंग
जैसे बिच्छू काटत एक जगह पीर हो सब अंग
बहुत गिर धरण मूर्छा खान लगे
बहुत सिर पीट-पीट रोवत कैकेई का बुरा मनान लगे
बहुते नर ज्ञानी हा बानी-बानी कर भावी पर बल जतान लगे।''[२०]

अहमदबख्श थानेसरी ने राम द्वारा निषादराज और शबरी के प्रति प्रेम दिखा कर सामाजिक समरसता और दलित प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया है। साथ ही समाज में फैली छुआछूत की भावना के खिलाफ लोगों में जागृति उत्पन्न की है। राम उनको छाती से लगाकर उनका आतिथ्य स्वीकार करते हैं। भरत और शत्रुघ्न ने तो निषादाज को सामने आता देख अपना रथ रोक लिया और उसे गले से लगाने के लिए स्वयं नीचे उतर पड़े, यथा–

''उतर गए रथ से तले भरत शत्रुघ्न बीर
मिलत निषादपति भूप से करते सर्द शरीर
प्रेम बस हो गल जफ्फी पाते है।
उधर से देव पुष्प गेरे फूले अंग नहीं समाते हैं
जानो लक्ष्मण साथ मिलाप हुआ हो मगन भरत फरमाते हैं
जो सेवक रामचन्द्र जी के हमरे महामित्र कहाते हैं
मुकताल
कहो रे नृप प्यारे भरत बस प्रेम पुकारे
कहो आप हो खुशी और परवार तुम्हारे।''[२१]

समाज में यदि सद्भावना और भाईचारा हो तो न केवल मनुष्य का जीवन सुखी होता है बल्कि समाज और देश भी उन्नति करता है। ऐसे शुभ अवसरों पर देवगण भी पुष्प वर्षा करते हैं। इसी तरह शबरी के प्रसंग में भी कवि ने उदारता का परिचय दिया है। शबरी के माध्यम से जाति-पाति की निस्सारता का पर्दाफाश करते हुए अहमदबख्श लिखते हैं –

''भीलनी बड़भाई है भक्त को चाहे शूद्र का नाम
जे ब्राह्मण हो गया पतीत वह ब्राह्मण किस काम
वेद का कर्म जौन को नहीं जाना
कुलहीन कुवर्ग शूद्र संज्ञा पवित्र न उसका इक दाना।।''[२२]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अहमदबख्श थानेसरी जाति-पाति, सम्प्रदाय और धर्म की संकीर्ण सीमाओं के बन्धन से मुक्त थे। वह सम्पूर्ण लोकरंजन एवं लोककल्याण के लिए समर्पित थे। वह धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक सौहार्द के साकार स्वरूप थे। निःसन्देह उनकी 'रामायण' धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक एकता का महाकाव्य है। इस महाकाव्य को यदि देश के लोग पढ़कर आत्मसात कर लें तो देश में कभी भी धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर दंगे नहीं होंगे।

सन्दर्भ :

१.राजनीतिक सिद्धान्त, स°श्वेता उप्पल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, २००६, पृ° १०८-१०९

२.हिन्दुस्तान की कहानी, जवाहर लाल नेहरू, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, १९६०
३.भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, बिपन चन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली १९९०, पृ. ३१९
४.वहीपृ. ३२०
५.रामायण, अहमदबख्श थानेसरी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८३, चम्बोला ४०१, पृ°६६३
६.वही, भेंट-२, पृ. ३,
७.वही, भूमिका, पृ. गअप
८.वही, भूमिका, पृ. गअप
९.वही, चम्बोला-२१२, पृ. ३५७
१०.वही, चम्बोला-१३५, पृ. १९२
११.वही, भेंट-२, पृ. ३
१२.वही, चम्बोला-१०८, पृ. ४८-४९
१३.वही, चम्बोला-११०, पृ. ४९
१४.वही, चम्बोला-११२, पृ. ५०
१५.वही, चम्बोला-११४, पृ. ५१
१६.वही, चम्बोला-१५४, पृ. ३३६-३३७
१७.वही, चम्बोला-३२३, पृ. १३३
१८.वही, चम्बोला-३२१, पृ. १३२
१९.वही, चम्बोला-३२२, पृ. १३२
२०.वही, चम्बोला-९८, पृ. १७८
२१.वही, चम्बोला-२९२, पृ. २५०
२२.वही, चम्बोला-२१७, पृ. ३५९
२३.हरियाणा की लोकधर्मी नाटय परम्परा, डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८३
२४.लोक संस्कृति के क्षितिज, पूर्णचन्द शर्मा, संजय प्रकाशन, अशोक विहार, दिल्ली, १९८७
२५.हरियाणा के सांगों में सौनदर्य निरूपण, डॉ. विजयेन्द्र सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८८
२६.कुरुक्षेत्र : एक सांस्कृतिक परिचय, बालकृष्ण मुञ्तर, विश्वविद्यालय प्रकाशन गृह, शाहदरा, दिल्ली, १९६५
२७.हरियाणवी लोकधारा, स. डॉ. रामपत यादव एवं डॉ. बाबूराम, प्रकाशन विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, २००४

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org